IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मैला सफाई कर्मियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Devika Sharma
Research Scholar (Ph.D)
Department of Sociology & Political Science
Faculty of Social Sciences
Dayalbagh Educational Institute
(Deemed University) Agra.

सारांश

भारत में हाथ से मैला ढोने की प्रथा प्राचीन समय से चली आ रही है। यह एक जाति आधारित व्यवसाय है। मैनुअल स्कैवेंजिंग ऐसा कार्य है, जो सफाई करने वालों के स्वास्थ्य को जोखिम में डालता हैं मैला सफाई कर्मियों के जीवन यापन में आय, स्वास्थ्य, सामाजिक संबंध, कार्य-जीवन संतुलन और खुशी जैसे कारक शामिल हैं। शोधकर्ता का उद्देश्य उन कारकों की व्याख्या करना है, जो मैनुअल मैला ढोने की प्रथाओं को जारी रखने के लिए प्रेरित किया हैं। जैसे- स्वास्थ्य और सुरक्षा, कल्याण सुविधायें, कार्य का पर्यावरण, मुआवजे, रहने की स्थिति, सामाजिक एकीकरण और उनके सामाजिक जीवन की सामाजिक प्रासंगिकता आदि। जिससे खराब शैक्षिक प्राप्ति, जाति आधारित भेदभाव, नियंत्रित व्यवसाय की गतिशीलता और कानून की उदासीनता आदि।

मुख्य शब्द: मैला सफाई कर्मी, हानिकारक प्रभाव, मानव स्वास्थ्य आदि।

परिचय

मैला सफाई कर्मियों के जीवन में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कारक, स्वास्थ्य और तनाव के लक्षण और पारिवारिक पृष्ठभूमि आदि एक अनसुलझी समस्या है। मानव जनित अवशिष्ट से उत्पन्न होने वाला ठोस कचरा व्यापक प्रदूषण के कारण एक बड़ी पर्यावरणीय समस्या के साथ-साथ मानव स्वास्थ्य पर खतरा भी बन गया है। मानव जीवन पर और नकारात्मक प्रभाव पड़ना है। किसी भी सुरक्षात्मक उपकरण के बिना मैला सफाई कर्मी व्यापकता अपशिष्ट के बीच कार्य करते है। बिना सुरक्षात्मक उपकरण के लगभग 90% अपशिष्ट श्रमिक विभिन्न प्रकार की चोटों से पीड़ित हो जाते हैं, साथ ही साथ सीवर से होने वाली मौतों की संख्या भी सबसे अधिक है। ऐसे में एक श्रमिक की मृत्यु हो जाने की स्थितियों में नियोक्ता के परिवार को सरकार द्वारा10 लाख रुपये का मुआवजा देने का प्रावधान है।

2011 की जनगणना के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में लगभग 1, 80,657 लोग जीवित रहने के लिए मैला सफाई कार्य में लगे हुए हैं। जो एक बड़े पैमाने पर सामाजिक भेदभाव से भरे जीवन का यापन कर रहे है। टाटा सामाजिक संस्थान विज्ञान (TISS) के अनुसार- भारत में लगभग 90% सभी मैला ढोने वालों को गंदगी से उत्पन्न बीमारियों से बचाव के लिए उचित सहायता उपकरण (जैसे दस्ताने, मास्क, बूट, झाड़ू आदि) उपलब्ध नहीं कराये जाते है। मैला सफाई कर्मियों का प्रतिदिन सीधा संपर्क मानव अपशिष्ट से होता है। जो उनके स्वास्थ्य के लिए खतरनाक तथा गंभीर है, जिससे इन कर्मियों को त्वचा तथा फेफड़ों के रोग हो जाते है।

मैला सफाई कर्मी का अर्थ

'मैला सफाई कर्मी' का अर्थ है कि एक व्यक्ति जो मैन्युअल रूप से मानव उत्सर्जन करने के लिए कार्यरत है। मैनुअल स्कैवेंजिंग एक अमानवीय प्रथा है, जो इस व्यवसाय में विशेष रूप से लगे हुए हैं, वह सामाजिक व्यवस्था की सबसे निचली सीढ़ी में स्तरीकृत होते हैं। मैला सफाई कार्य को केवल "शुष्क शौचालय" से उत्सर्जन (रात की मिट्टी) के मैनुअल निष्कासन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, अर्थात, बिना मॉडम फ्लश सिस्टम का शौचालय।

शोध विधि-

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के तथ्य संकलन में हेतु द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है । जिसमें आवश्यकतानुसार तथ्यों हेतु पुस्तकों, पत्रिकों, पत्रिकाओं,शोध पत्र व इन्टरनेट का प्रयोग किया गया है तथा प्रस्तुत शोध की प्रकृति गुणात्मक है ।

साहित्य पुनर्वलोकन-

- **सिंह, भाषा. (2014)-** प्रस्तुत पुस्तक में भारत के ग्यारह राज्यों में मैला ढोने वालों की दुर्दशा को उजागर किया गया है। सिंह ने मैला ढोने को शौचालयों से मानव मल को हटाने के रूप में वर्णित किया है। उसके काम से पता चलता है कि झाड़ू की मदद से कचरे को हटा दिया जाता है और मेहतर की टोकरी में ढेर कर दिया जाता है। उनका तर्क है कि सेप्टिक टैंक आमतौर पर रात में महिलाओं द्वारा साफ किए जाते हैं। जबकि पुरुषों और महिलाओं दोनों को इसे साफ करने के लिए नियोजित किया जाता है, सूखे शौचालयों की सेवा आमतौर पर केवल महिलाओं द्वारा की जाती है। सिंह ने कहा कि जिन लोगों को इस अपमानजनक कार्य को करने के लिए मजबूर किया जाता है वे अदृश्य रहते हैं, और उन्हें समाज के हाशिये पर धकेल दिया जाता है।
- **गताड़े, सुभाष. (2015)-** जाति और स्वच्छता को अलग करने के लिए गाटाडे स्वच्छ भारत अभियान की आलोचना करते हैं। उनका दावा है कि पवित्रता और प्रदूषण की धारणाएं "अपवित्र जातियों" के उत्पीड़न को कायम रखती हैं, जिन्हें हाथ से मैला ढोने के लिए मजबूर किया जाता है। यह पत्र बताता है कि निम्न दलित श्रम की उपलब्धता से अमानवीय कार्य करने की अपेक्षा की जाती है यह भारत में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन के विकास की अनदेखी के कारणों में से एक है। गाटाडे दलित समुदायों द्वारा प्रतिरोध की आवाजों को पहचानते हैं जैसे सफाई कर्मचारी आंदोलन द्वारा सूखे शौचालयों का विध्वंस, झाड़ू और टोकरी को जलाना, जिसका इस्तेमाल हाथ से मैला ढोने में किया जाता है, और अन्य अभियान जो हाथ से मैला उठाने वाले को कलंकित छोड़ने के लिए अपील करने के लिए आयोजित किए जाते हैं, और "अशुद्ध व्यवसाय"।
- **हयदे, मार्टिन, लाडुसिंघ, लाइशरम, etl. 'वर्क एंड हैल्थ इन इंडिया' (2018)-** प्रस्तुत पुस्तक में भारत के श्रम बाजार को पिछले कुछ दशकों के तीव्र आर्थिक विकास ने मौलिक रूप से बदल दिया है, जिससे लाखों पूर्व श्रमिकों को विनिर्माण उद्योगों में लाया गया है। इसमें सफाई कर्मियों के कार्य से समस्याएँ होती हे तथा साथ-साथ स्वास्थ्य और स्वास्थ्य समस्यायेँ भी आम हो गयी हैं, जबकि गैर-संचारी रोग, जैसे हृदय संबंधी समस्याएं और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे जैसे तनाव बढ़ गए हैं। यह अंतःविषय कार्य उन दो प्रवृत्तियों को जोड़ता है जो भारतीय मैला सफाई कामगारों के स्वास्थ्य पर काम करने की परिस्थितियों के प्रभाव के विश्लेषण की पेशकश करते हैं जो कि क्षेत्र और गहराई में अभूतपूर्व है।
- **शिवकर्मी, नगरजन और आचार्या, संघमित्र s. etl. 'हैल्थ, सेफटि एंड वैल-बिंग ऑफ वर्कर्स इन थे इन्फ़ारमल सैक्टर इन इंडिया' (2019) -** प्रस्तुत पुस्तक विकासशील देशों में अनौपचारिक क्षेत्र में श्रमिकों के व्यावसायिक स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण की मुख्य समस्याओं पर केंद्रित है, जहां यह अधिकांश ग्रामीण श्रम शक्ति और शहरी श्रम शक्ति का एक बड़ा प्रतिशत है। इस क्षेत्र की विशेषता कम आय, अस्थिर रोजगार और कानून/नीतियों या ट्रेड यूनियनों के रूप में सुरक्षा की

कमी है। हालांकि कुछ स्वास्थ्य और समस्या-समाधान उपायों को पेश किया गया है, असंगठित क्षेत्र, या अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में श्रमिकों के सामने आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए एक केंद्रित अकादमिक प्रयास की कमी है। यह पुस्तक दलित श्रमिकों के प्रवास, अल्पसंख्यकों और विकलांगों के सामाजिक समावेश, महिला श्रमिकों के लिए प्रावधान, विमुद्रीकरण, मैला सफाई कर्मियों के खतरनाक काम के लिए व्यावसायिक सुरक्षा, और अनौपचारिक कार्य के विभिन्न क्षेत्रों के संबंध में श्रमिकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का मूल्यांकन करती है। कृषि, निर्माण, परिवहन, स्वच्छता, कमाना, तंबाकू उद्योग, पावरलूम उद्योग, सरोगेसी और स्वरोजगार। यह इन दलित श्रमिकों के सामने आने वाली चुनौतियों का एक विस्तृत विवरण और विश्लेषणात्मक प्रतिबिंब प्रदान करता है, और उन्हें कम करने में मदद करने के लिए सामाजिक नीति परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह विकास अध्ययन, कार्य के समाजशास्त्र, स्वास्थ्य और श्रम अर्थशास्त्र, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक कार्य में रुचि रखने वाले शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए एक मूल्यवान संपत्ति प्रदान करता है।

अध्ययन के उद्देश्य-

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है :-

1. मैला ढोने वाले के शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों का अध्ययन करना ।
2. मैला सफाई कर्मियों के स्वास्थ्य की वर्तमान स्थितियों का अध्ययन करना ।

मैला ढोने वाले के शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दे

मैला सफाई कर्मी का जीवन हर स्तर पर जोखिम में है, स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे को देखने से यह समस्या की स्पष्ट तस्वीर देखि जा सकती है। इन मैला सफाई कर्मचारियों की काम करने की स्थिति लगभग एक सदी से अधिक समय तक अपरिवर्तित रही है। इन श्रमिकों के सामने आने वाले सामाजिक अत्याचारों के अलावा, उनकी कुछ स्वास्थ्य समस्याओं से अवगत किया जा सकता है। इन स्वास्थ्य खतरों में मिथेन और हाइड्रोजन सल्फाइड, कार्डियोवस्कुलर डीजनरेशन, मस्कुलोस्केलेटल डिसऑर्डर जैसे ऑस्टियो आर्थ्रिटिक बदलाव और इंटरवर्टेब्रल डिस्क हर्नियेशन, हेपेटाइटिस, लेप्टोस्पायरोसिस और हेलिकोबैक्टर, त्वचा की समस्याएं, श्वसन प्रणाली की समस्याएं और परिवर्तित फुफ्फुसीय कार्य मापदंडों जैसे हानिकारक गैसों के संपर्क में हैं। जिससे पेचिश, टाइफाइड, बुखार, हैजा, और दस्त जैसी बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

घटिया सफाई व्यवस्था और अन्य सुविधाओं के अभाव मे यह प्रथा वर्तमान में प्रचलित है। आज भी सिर पर मैला ढोने वाले प्राय: सुरक्षा उपकरण के बिना ही मैनहोल की सफाई का करी भी करता है, जिससे कार्बन मोनोक्साइड के जहरीले प्रभाव से कई मृत्यु हो जाती है। इस कार्य से संबन्धित सभी लोगों को सेवा करने का कार्य प्रदान किया गया है। मैला सफाई कर्मी का कार्य उनके क्षेत्र में रहने वालों के स्वास्थ्य के लिय खतरा है।

मैला सफाई कर्मी के स्वास्थ्य से संबन्धित वर्तमान स्थितियां

बिना किसी उचित सुरक्षा उपकरणों के भारत के कुछ हिस्सों में अब भी स्कैवेंजिंग जीवित है। यह गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में सबसे अधिक प्रचलित माना जाता है। भारत में कुछ नगरपालिकाएँ अभी भी सार्वजनिक शुष्क-शौचालय चलाती हैं। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, लगभग 340,000 लोग ऐसे हैं जो भारत में मैला सफाई कर्मी के रूप में काम करते हैं। मैला सफाई कार्य को पतले बोर्डों जैसे बुनियादी उपकरणों के साथ किया जाता है, या तो बाल्टी या टोकरी को बोरी से ढक दिया जाता है और सिर पर ढोया जाता है। नौकरी की प्रकृति के कारण, श्रमिकों को कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। संविधान की प्रविष्टि 6 के अनुसार स्वच्छता एक राज्य विषय है। इसके तहत, फरवरी 2013 में दिल्ली ने घोषणा की कि वे मैला सफाई कार्य पर प्रतिबंध लगाया जाता हैं, जिससे वे ऐसा करने वाला भारत का पहला राज्य बन जाएगा। जिला मजिस्ट्रेट यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार हैं कि उनके जिले में कोई मैनुअल मैला ढोने वाले काम नहीं कर रहे हैं। 3 साल के भीतर नगरपालिका, रेलवे और छावनी को पर्याप्त सेनेटरी शौचालय उपलब्ध कराना चाहिए। मैला सफाई कर्मीएंड कंस्ट्रक्शन ऑफ ड्राई लैट्रिन (निषेध) अधिनियम, 1993 के तहत स्केवेंजर्स के रोजगार या सूखे (गैर-फ्लश) शौचालयों के निर्माण पर एक साल तक की कैद और 2,000 रुपये का जुर्माना लगाया जाता है। 20 वर्षों के दौरान कानून के तहत कोई भी सजा नहीं मिली। परंतु अभी भी मैला सफाई कार्य का प्रचलन हमारे देश के कई शहरों में मौजूद है। सफाई कर्मचारी अनुसंधान और नवाचार के निदेशक, **डॉ इंदिरा खुराना** ने 2018 में कहा कि "मैला सफाई कार्यके उन्मूलन के लिए एक सर्जिकल स्ट्राइक की जरूरत है। मैनुअल मैला ढोने वालों के पूर्ण उन्मूलन और पुनर्वास के लिए एक मिशन स्थापित करने की आवश्यकता है। केंद्र को एक निगरानी और जवाबदेही ढांचे के साथ एक विस्तृत, समयबद्ध और पारदर्शी कार्य योजना तैयार करनी चाहिए, भले ही स्वच्छता एक राज्य का विषय हो।"

निष्कर्ष

मैला सफाई कर्मी पूरे भारत के में भी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक भेदभाव का सामना करते हैं। सफाई कर्मचारी अभी भी सीवर और मानव उत्सर्जन की सफाई के लिए पुराने उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं; इसलिए इससे गंभीर स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का प्रसार होता है। मैला सफाई कर्मी के पेशे और उनके परिवार के प्रति अमानवीय सामाजिक व्यवहार उनके निचले सामाजिक संबंधों और जीवन संतुलन को प्रभावित करता है। अखिल भारतीय के आधार पर मैला सफाई कार्य में लगी महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों की तुलना में बहुत अधिक है। इस अध्ययन ने मैनुअल मैला ढोने वालों पर ध्यान केंद्रित किया है, उनकी अधिक स्वास्थ्य समस्याएं (शारीरिक और मानसिक दोनों), खराब मान्यता, चोट, भेदभाव और नौकरी के कारण बुरी आदतें आदि समस्याओं का अध्ययन किया गया हैं। इसके अलावा अध्ययन नई नीतियों के निर्माण और स्वच्छ भारत मिशन के तहत उचित प्रशिक्षण / जागरूकता गतिविधियों के माध्यम से अपशिष्ट श्रमिकों की सुरक्षा के लिए भी आग्रह करता है। जीवन की गुणवत्ता के साथ मैला सफाई कर्मी के कार्य की गुणवत्ता पर भी विचार करना आवश्यक है, साथ ही साथ समय मैला सफाई कर्मीकी दुर्दशा को समझने और संबोधित करने के लिए तीन पहलूओं को शामिल करना चाहिए: उनकी पहचान, मुक्ति (अमानवीय कार्य से मुक्ति) और पुनर्वास। इन्हीं तीनों को समर्पित समय, प्रतिबद्धता और संसाधनों की आवश्यकतायेँ होती है।

संदर्भ ग्रंथ

- Employment of Manual Scavengers and Construction of Dry Latrines (Prohibition) Act, 1993, Chapter, -I, Preliminary, Definitions,
- https://www.indiatoday.in/india/story/manual-scavenging-health-risks-that-haunt-cleaners-265552-2015-09-30.
- Hagerty, M. R., et al. (2001), Quality of life Indexes for National Policy: Review and Agenda for Research, Social Indicator Research, Vol. 55, No. 1, pp. 1-96 30.
- Hanna Sutela (2006), Correlate with the Definition of QWL, Statistical Journal of the United Nations, No. 23, pp. 57- 67.
- Hsu, M.,& Kernohan, G., (2006). Dimensions of hospital nurses' quality of working life. *Nursing and Healthcare Management and Policy, 120-131.*

- https://www.indiatoday.in/india/story/manual-scavenging-health-risks-that-haunt-cleaners-265552-2015-09-30.
- Nath, D. (2019). *88 manual scavenging deaths in 3 years*. Retrieved from https://www.thehindu.com/news/national/88-manual-scavenging-deaths-in-3-years/article28336989.ece
- Rastriya Garima Abhiyan, 2011 Eradication of inhuman practice of Manual Scavenging and Comprehensive Rehabilitation of Manual Scavengers of India, Dewas, MP.
- Ravindra, K., Kaur, K., & Mor, S. (2016). Occupational exposure to the municipal solid waste workers in Chandigarh, India. *Waste Management & Research*, *34*(11), 1192-1195.
- Robbins, S. (1989). Organizational Behaviour: Concepts, Controversies and Applications. Englewood Cliffs, New Jersey, Prentice – Hall.
- Thangadurai, T., & Suriyan, K. (2019). Status of Manual Scavengers in Tiruchirappalli Town. *The International journal of analytical and experimental modal analysis , 11* (12), 64-79.
- Walton. R.E. (1973), Quality of Work Life: What is it? Sloan Management Review, 15 (1), pp. 11- 21.

Xavier, J. V. (2018). A Study on the Quality of Work Life of the Manual Scavengers(Study Conducted At Tiruchrappalli City Corporation Workers In Tamil Nadu, India). *International Journal of Advance Research in Computer Science and Management Studies , 6* (2), 89-96.